देह जनित इच्छाओं का भोग किया है जितना।
आतुर हुआ है फिर मन उसे भोगने को उतना।
अगर करना है देह जनित इच्छाओं का नाश।
पहले जो भोगा उसकी स्मृति का करो विनाश।
जो भोगा है अगर उसका अनुभव याद रहेगा।
मन अपना फिर उसे भोगने की इच्छा में बहेगा।
अपनी कर्मेन्द्रियों के जब हम बन जाते हैं दास।
भूलें करके बड़ी बड़ी हम होते जाते हैं उदास।
जब नहीं समझते हैं हम अपने आपको साधक।
अपने ही संकल्प बनेंगे अपनी राह में बाधक।
बनना है अगर हमको सच्चा रूहानी साधक।
देह से न्यारे होकर देह को समझो एक साधन।
जब चलना ही है निरन्तर साधना के पथ पर।
समझो खुद को रथी फिर बैठो अपने रथ पर।
आओ हम सब अपना मन श्रीमत पर संभालें।
चुन चुन करके अपनी कमियां सभी निकालें।
शिव बाबा ने सिखाया इक यही हमको गीत।
मन को जीतने वाला ही बनता है जगतजीत।
आओ श्रीमत पर अपने मन पर राज्य चलाएं।
पवित्रता को धारण कर हम जीवन श्रेष्ठ बनाएं।